

डॉ. ब्रूस वाल्टके, भजन, व्याख्यान 19

© 2024 ब्रूस वाल्टके और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ब्रूस वाल्टके और भजन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 19, धार्मिक दृष्टिकोण, कल्टस स्लैश अनुष्ठान है।

हम ह्यूस्टन, टेक्सास के एक उपनगर, शुगर लैंड, टेक्सास में डार्लिन ब्रिज के सुंदर घर में हैं। और अब सिएटल के एक उपनगर, सैममिश क्षेत्र, रेडमंड में मेरे घर में आपका स्वागत है। मुझे कहना होगा, आपका स्वागत करना और भजन की पुस्तक में इन विचारों और अध्ययनों को जारी रखना बेहद खुशी की बात है।

मुझे लगता है कि आपके नोट्स के पेज तीन पर कैलेंडर को देखकर यह समीक्षा करना अच्छा होगा कि हम कहां हैं।

इसलिए, मैं आपको हमारे पाठ्यक्रम के पेज तीन को देखने और यह जानने के लिए आमंत्रित करता हूँ कि हम पाठ्यक्रम में कहां हैं। हमारा प्रयास प्रेरित भजनकार के मन में प्रवेश करने का रहा है, विशेषकर स्वयं डेविड के। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के खिलाफ उनके शब्दों की व्याख्या करने की ऐतिहासिक आलोचनात्मक पद्धति के अलावा, हम बेहतर समझ और भजनकार के दिमाग में प्रवेश के लिए चर्च के इतिहास के भीतर अन्य मान्यता प्राप्त तरीकों या दृष्टिकोणों को देख रहे हैं।

इसलिए, कैलेंडर के पेज तीन पर, पाठ्यक्रम के परिचय के बाद, मैंने व्याख्या की कला, हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में बात की। मुख्य बात यह है कि मूल रूप से हमें स्तोत्र की पुस्तक के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखना चाहिए क्योंकि अंततः लेखक ईश्वर है और ईश्वर आत्मा है। हम वैज्ञानिक विधि से ईश्वर का साक्षात्कार नहीं करते।

हम आत्मा के माध्यम से, विश्वास, आशा और प्रेम, इन सभी के माध्यम से, ईश्वर की अपनी आत्मा, पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति के माध्यम से ईश्वर का सामना करते हैं। साथ ही, हमने कहा, अगर हमें मानव लेखक को समझना है तो उसके प्रति सहानुभूति रखनी होगी। तो, हम उसकी दुनिया में और इज़राइल की वाचाओं के उसके इतिहास और उन वाचाओं के ईश्वर में उसके विश्वास में प्रवेश करते हैं।

हम उसे उसके साथ साझा करते हैं। जब तक हम उस सामान्य भावना और उस सामान्य विश्वास को साझा नहीं करते, हम भजनों की अपनी व्याख्या में गलती करेंगे। लेकिन ईश्वर और मानव लेखक के अलावा, पाठ भी है और इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

शिक्षाविदों में हम यहीं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हम पाठ की व्याख्या करने के तरीकों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। तो दृष्टिकोणों में से एक, नंबर तीन, ऐतिहासिक दृष्टिकोण था।

हम डेविड के जीवन में प्रवेश करते हैं, लेकिन जो महत्वपूर्ण बात हम वहां बता रहे थे वह यह है कि लेखक एक राजा है। स्तोत्र की शाही व्याख्या है। यह एक राजसी भजन पुस्तक है।

यह उस राजा के गीत हैं जो कष्टों और विजयों से गुजरा है। शाही तत्व उन 10 भजनों से कहीं अधिक व्यापक है जिनमें राजा का उल्लेख है। इसलिए, हमने तर्क दिया, यह पूरी किताब में व्याप्त है, जो इसके बारे में हमारे सोचने के तरीके को बदल देगा।

इसका हमारे ईसाई विश्वास पर गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि वे अप्रत्यक्ष रूप से कम से कम ईसा मसीह की बात करते हैं, जो राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं। प्रत्येक दृष्टिकोण के साथ, मैंने कुछ विवरण के साथ व्याख्या करने का प्रयास किया है। मैंने कुछ भजन दिये हैं, एक या दो।

और इसलिए, हम वास्तव में स्तोत्र में प्रवेश करते हैं और उस विशेष स्तोत्र के प्रति उस दृष्टिकोण की वास्तविकता या उपयोगिता को देखते हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण के मामले में, हमने भजन 4 को देखा। भजनों को देखने और उन्हें रूपों के अनुसार समूहित करने की तैयारी में, इसे औपचारिक दृष्टिकोण से देखने का सबसे व्यापक रूप श्रेणी यह है कि यह कथा के विरुद्ध कविता है और गद्य। हमने यह समझने की कोशिश की कि हिब्रू कविता क्या है।

हमने उस पर एक व्याख्यान बिताया। उस व्यापक वर्गीकरण के बाद, हमने उस चीज़ पर ध्यान दिया जिसे आलोचना के रूप में जाना जाता है, भजनों को अलग-अलग शैलियों में समूहित करना। इसमें उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना शामिल था जिसमें वे उत्पन्न हुए थे, साथ ही उनके विभिन्न गैटिंग, जर्मन शब्द, शैली, फ्रांसीसी शब्द, रूप, अंग्रेजी शब्द को भी देखना शामिल था।

और हमने भजनों की व्यापक श्रेणी पर ध्यान देकर शुरुआत की। ये परमेश्वर की स्तुति में गाए गए गीत थे। मूलतः वे ईश्वर की स्तुति सृष्टिकर्ता और मुक्तिदाता के रूप में, सृष्टि के ईश्वर और इतिहास के ईश्वर के रूप में करते हैं।

यह ईश्वर को व्यापक रूप से देखता है, प्रार्थना के विशिष्ट उत्तरों को नहीं। यह दूसरी तरह की प्रशंसा है जिसका हमने सामना किया। इसे आभारी प्रशंसा कहा जाता है।

अर्थात्, आपने एक विशिष्ट आवश्यकता के लिए भगवान से प्रार्थना की और भगवान ने उस आवश्यकता का उत्तर दिया। फिर आपके पास प्रशंसा का एक विशिष्ट गीत है। भजन के लिए, हमने दो भजन देखे।

हमने भजन 100 को देखा और हमने भजन 8 को देखा। कृतज्ञ स्तुति के गीत के लिए, हमने भजन 92 को देखा और हम देख सकते थे कि यह डेविड का भजन 51 है। यह भी आभारी प्रशंसा का गीत है, लेकिन हमने इसे उसके संबंध में संभाला विलाप, और पाप की स्वीकारोक्ति। भजनों की सबसे बड़ी श्रेणी व्याख्यान 11 और 12 थी, जो विलाप भजनों से संबंधित थी।

जैसा कि हम जानते हैं, यह भजनों में से 50 है, भजनों में से तीसरा, भजनहार संकट में है और वह अपनी ज़रूरत के लिए भगवान की ओर देखता है। लेकिन हमने यह भी नोट किया कि ऐसा कोई

भजन नहीं है कि आप बिना प्रशंसा के अपनी जरूरत के लिए भगवान के पास आते हैं। भजन 41 की तरह, भ्रमित होने पर भी, बिना किसी स्पष्टीकरण के हम आपकी खातिर दिन भर मारे जाते हैं।

इसकी शुरुआत भगवान की स्तुति से हुई. भजनहार और अय्यूब के बीच यही अंतर है। अय्यूब ने बिना प्रशंसा के अपने कष्टों की शिकायत की, और यह परमेश्वर को अप्रसन्न था और उसे पश्चाताप करना पड़ा।

भजनहार शिकायत भी करता है और विलाप भी करता है। हमने विलाप और शिकायत के बीच अंतर देखा। विलाप तब होता है जब आप पीड़ित होते हैं और आप निर्दोष होते हैं और नहीं, आप पीड़ित होते हैं।

लेकिन एक शिकायत यह है कि जब आप पीड़ित होते हैं और यह अन्यायपूर्ण होता है तो आपको आश्चर्य होता है कि इसके बीच में भगवान कहां हैं क्योंकि आपने किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया है। यह नाहक पीड़ा है. नाहक कष्टों में आप इसकी शिकायत सुनते हैं।

विलाप किसी भी प्रकार का कष्ट हो सकता है, जिसमें योग्य कष्ट भी शामिल है, जो पाप की स्वीकारोक्ति होगी। इसलिए हमने व्यक्तिगत विलाप को देखा, जैसे कि भजन 3, दाऊद के परिचय के बाद सबसे पहला भजन, जब उसे अबशालोम से भागना पड़ा था। फिर हमने एक मसीहाई भजन भी देखा, जिसके बारे में हम बाद के व्याख्यान में बात करेंगे।

हम विशेष रूप से मसीहा के बारे में बात करेंगे, लेकिन विशेष रूप से मसीहाई भजन जिसे यीशु ने क्रूस पर अपने होठों पर लिया था वह भजन 22 है। हमने सांप्रदायिक विलाप को देखा। मैंने भजन 90 करने की आशा की थी, लेकिन पता चला कि हमारे पास ऐसा करने का समय नहीं था।

लेकिन हमने भजन 44 को देखा, जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है। विलाप स्तोत्र का व्युत्पन्न विश्वास के गीत हैं क्योंकि जैसा कि हमने देखा, इन विभिन्न शैलियों के अलग-अलग रूप हैं। विलाप या प्रार्थना स्तोत्रों का एक उद्देश्य यह है कि वहाँ हमेशा, या सामान्यतः विश्वास का एक भाग होता है।

इसलिए, वे विश्वास के माध्यम से विलाप से याचिका की ओर बढ़ते हैं क्योंकि वे खुद को याद दिलाते हैं कि वे कौन हैं, या इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान कौन हैं और उन्होंने अपने लोगों के लिए क्या किया है। आशा, आस्था और आत्मविश्वास के उस नए माहौल में, हम उस याचिका को सुनते हैं जो उससे निकलती है। अब हम व्याख्यान 17 तक पहुँच चुके हैं, जिसे धार्मिक दृष्टिकोण कहा जाता है।

इसलिए, मैं आपको अपने नोट्स को पृष्ठ 256 पर देखने के लिए आमंत्रित करता हूँ, जहाँ हम धार्मिक भजनों को संभालेंगे। लेकिन इससे पहले कि हम नई सामग्री में कूदें, मुझे लगता है कि यह उचित है कि हमें एक साथ प्रार्थना से शुरुआत करनी चाहिए।

तो, पिता, हम अपने व्याख्यान की शुरुआत आपकी प्रशंसा करते हुए करते हैं कि आपने खुद को प्रकट किया और हमें अनुग्रह के साधन, अपने शब्दों की कृपा प्रदान की। और हम अपने हृदयों को तैयार किए बिना इस पर विचार नहीं करेंगे। और हम आपसे पूछते हैं, हम प्रार्थना करेंगे जैसा कि धर्मविधि में होता है, परम दयालु भगवान, हम स्वीकार करते हैं कि हमने जो किया है और जो हमने अधूरा छोड़ दिया है, उसके द्वारा हमने विचार, शब्द और कर्म से आपके विरुद्ध पाप किया है। हमने तुम्हें पूरे दिल से प्यार नहीं किया।

हमने अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम नहीं किया। हमें सचमुच खेद है। और हम विनम्रतापूर्वक पश्चात्ताप करते हैं।

हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम पर दया करें, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से हमारे सभी पापों को क्षमा करें, और हमें सभी अच्छाइयों में मजबूत करें। और पवित्र आत्मा की शक्ति से, हमें अनन्त जीवन के मार्ग में बनाए रखें। और हमें विश्वास है प्रभु, कि जैसा कि आपने वादा किया है कि जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और त्यागते हैं, तो हमें माफ कर दिया जाता है और हम पवित्र स्थान में प्रवेश करने के योग्य हो जाते हैं क्योंकि हमने मसीह की धार्मिकता भी पहन ली है। और उस विश्वास के साथ, हम मसीह के नाम में भजनों में आगे प्रवेश करते हैं। तथास्तु।

धार्मिक दृष्टिकोण भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण का व्युत्पन्न है। हमने कहा कि आलोचना के स्वरूप में दो भाग होते हैं। एक तो यह कि आप जीवन की स्थिति को देखें। और दूसरा, जैसा कि आप देखते हैं कि भजन किस तरह से रचा गया है, इसकी मनोदशा, इसकी शब्दावली, इसके रूपांकन जो इसे या तो प्रशंसा का भजन या कृतज्ञ गीत या विलाप बनाते हैं।

हम स्तोत्र की सेटिंग को देख रहे हैं, लेकिन हम इसे इतने व्यापक रूप से देखने जा रहे हैं कि यह एक अलग दृष्टिकोण के रूप में अलग से सोचने के योग्य है। दूसरे शब्दों में, हमने जो किया है उससे यह मात्रात्मक रूप से बहुत अधिक है। यह वास्तव में गुणात्मक रूप से एक और दृष्टिकोण बन जाता है।

और इसलिए, हम धार्मिक दृष्टिकोण पर विचार कर रहे हैं। साहित्य में इस दृष्टिकोण को आम तौर पर पंथवादी, सांस्कृतिक दृष्टिकोण कहा जाता है। यह एक कठिन शब्द है क्योंकि औसत अंग्रेजी बोलने वाले के लिए, एक पंथ का अर्थ लोगों का एक छोटा समूह है जो किसी प्रकार के धार्मिक विचार या अभ्यास को मानता है जिसे बहुसंख्यक लोग अजीब या यहां तक कि भयावह मानते हैं।

जाहिर तौर पर अकादमिक साहित्य में इसका उपयोग इस तरह नहीं किया जाता है। अकादमिक साहित्य में पंथवादी का तात्पर्य धर्म की बाहरी अभिव्यक्ति से है। और इसलिए, हम इस व्याख्यान में देखने जा रहे हैं, सबसे पहले, हम इसे परिभाषित करने जा रहे हैं।

और फिर हम जीवन की उस स्थिति को देखेंगे जहां यह घटित होती है और अन्य पहलू भी। और हम यह देखने जा रहे हैं कि पंथवादी कैसे कार्य करता है? और फिर हम इसके पहलुओं को

देखेंगे, जैसे कि पवित्र स्थल, पवित्र कैलेंडर, पवित्र कार्मिक, पवित्र कार्य, पवित्र वस्तुएँ, इत्यादि। लेकिन आइए एक परिभाषा से शुरू करें।

स्तोत्र की व्याख्या के इतिहास में पंथवादियों के बारे में दो मुख्य विचारक आइक्रोट और मोविन्केल हैं। मैं आपको पहले मोविन्केल की परिभाषा देता हूँ। सिगमंड मोविन्केल एक स्कैंडिनेवियाई-नार्वेजियन विद्वान थे।

कार्यों के बीच लिखा, उनका पहला प्रमुख कार्य 1904 था। और फिर उनकी महान रचना 1920 के दशक में सामने आई। वह इसे इस प्रकार परिभाषित करते हैं।

वह एक और शब्द का उपयोग करता है, अनुष्ठान। पंथ या अनुष्ठान को सामाजिक रूप से स्थापित और विनियमित पवित्र कृत्यों और शब्दों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें मण्डली के साथ देवता का मिलन और संवाद स्थापित, विकसित और अपने अंतिम लक्ष्य तक लाया जाता है। इसलिए, यह पवित्र कृत्यों और शब्दों से संबंधित है जो भगवान और उपासक के बीच संबंध स्थापित करते हैं।

आइक्रोट ने इसे इन शब्दों में रखा है। कल्टिस्ट शब्द का अर्थ मण्डली या समुदाय के भीतर किए गए धार्मिक अनुभव और ठोस बाहरी कार्यों की अभिव्यक्ति से लिया जाना चाहिए, अधिमानतः आधिकारिक तौर पर नियुक्त प्रतिपादकों द्वारा और निर्धारित रूपों में। इसलिए आधिकारिक तौर पर नियुक्त व्याख्याता इसराइल के पुजारियों की तरह होंगे और उनके निर्धारित रूप स्तोत्र या बलिदानों आदि में होंगे।

कर्ट गोल्डहैमर इसमें अलग ढंग से आते हैं। वह इसे संरचित अनुभव, प्रतीकात्मक, सार्थक गतिविधि को उद्धृत करने के रूप में देखता है। यह उद्घरण, तथ्यों का पैटर्न है, जो इसके भीतर खड़े व्यक्ति के दिमाग और दृष्टिकोण में एक दूसरे के साथ उचित संबंध रखता है।

इसलिए हम सभी धर्म की बाहरी अभिव्यक्ति में संलग्न हैं, और धर्म से आगे बढ़ने के इसके दो पहलू हैं। यह आंतरिक आध्यात्मिक अनुभव और भावनाएँ और भावनाएँ और विचार हैं जो बाहरी क्रियाओं में अभिव्यक्ति पाते हैं। जैसे ही आपके पास दो लोग एक साथ पूजा करते हैं, आपके पास एक प्रकार का रूप होगा।

अर्थात्, आपके पास एक जगह होगी जहां आप मिलेंगे और एक समय होगा जब आप मिलेंगे। तो तुरंत किसी प्रकार का बाहरी रूप आता है जिसे सामूहिक पूजा पर थोपना पड़ता है। लेकिन जब हम उस पूजा में होते हैं, उदाहरण के लिए, जहां हम एक निश्चित पैटर्न के आदी होते हैं, तो आम तौर पर हम एक आह्वान के साथ शुरू करेंगे, भगवान को आमंत्रित करेंगे और मसीह पर हमारी उपस्थिति पर भरोसा करेंगे।

कुछ संप्रदायों में, वे वास्तव में मसीह के स्तुति गीतों पर अपना निवास स्थान लेने और अपने लोगों के साथ उपस्थित होने के प्रतीक के रूप में मण्डली में क्रॉस ले जाते हैं। कभी-कभी बाइबल को पकड़कर मण्डली में ले जाया जाता है। हम ईश्वर की उपस्थिति का आह्वान करते हैं और हम उसकी स्तुति गाएंगे।

हम अपनी प्रार्थनाएँ उनके सामने लाएँगे। किसी बिंदु पर, धर्मग्रंथ का पाठ, रोशनी के लिए प्रार्थना, धर्मग्रंथ का पाठ, धर्मग्रंथ का उपदेश और प्रतिक्रिया होगी। कुछ समुदायों में, उपदेश का मुख्य आकर्षण एक निमंत्रण है, जो अधिक सुसमाचारीय है।

और उपदेश का मुख्य आकर्षण लोगों के लिए निर्णय लेना है। अन्य मंडलियों में, पूजा का मुख्य आकर्षण प्रभु भोज में भागीदारी है जिसमें वे एक उपहार प्राप्त करते हैं, भगवान की क्षमा पर भरोसा करते हैं और भोज के माध्यम से और भोज के साथ आने वाले शब्दों के माध्यम से उनकी उपस्थिति में भाग लेते हैं। किसी भी स्थिति में, यह सब इस बाहरी अभिव्यक्ति का हिस्सा है।

इसलिए, मैं पृष्ठ 256 पर निष्कर्ष में लिखता हूँ, कि यह पूरी तरह से आंतरिक और आध्यात्मिक भावनाओं के खिलाफ सामग्री है जिसके साथ हम इस व्याख्यान में सोच रहे हैं। यह सहजता के विरुद्ध विनियमित या निर्धारित रूप है। कुछ लोग सहजता से, कम रूप से बेहतर पूजा करते हैं, और अन्य लोग सख्त रूप से बेहतर पूजा करते हैं।

यह सही और गलत का मामला नहीं है। यह वास्तव में एक मामला है कि व्यक्ति के लिए सबसे उपयुक्त क्या है। मुझे लगता है कि न्यू टेस्टामेंट की एक खूबी यह है कि इसमें ऑन-सेट फॉर्म बहुत कम हैं।

ईसाई धर्म खुद को कई संस्कृतियों में ढालने में सक्षम है क्योंकि पुराने टेस्टामेंट के विपरीत, जो कई मायनों में बहुत सख्त रूप है, नए टेस्टामेंट में इसका रूप कम है। हमने कहा, यह व्यक्ति और इसकी एकीकृत संरचनाओं के विरुद्ध मण्डली है, जो केवल डेटा और प्रतिबिंब के वैचारिक दृष्टिकोण के विरुद्ध है। तो यह वह गतिविधि है जिसका अर्थ है।

पृष्ठ 257 पर, मैं इसे बाब के एक श्लोक को उद्धृत करते हुए स्तोत्र पर लागू करता हूँ। इस साहित्य, अर्थात् भजनों के उपयोग में, व्यक्ति अपने समूह के साथ एक हो गया और उस भावना को साझा किया, जिसने उसे प्रेरित किया। चाहे उस क्षण का मूड पश्चाताप, विश्वास, या खुशी से धन्यवाद देने का था, उसने और मैंने जोड़ा, उसने खुद को पाया, और उन्होंने सांप्रदायिक पूजा के कृत्यों में अपनी अनारक्षित भागीदारी के माध्यम से अपनी आत्मा की इच्छा के भगवान को भी पाया, जिससे अमीर इस लोगों के इतिहास के संसाधन और महत्वाकांक्षी परंपराएँ उन्हें उपलब्ध करायी गईं।

मुझे लगता है कि यह बहुत उपयोगी उद्धरण है। मैं हेगेल के कार्यकाल में कल्टस को परिभाषित नहीं कर रहा हूँ। हेगेल ने सोचा कि आपके पास अनंत वास्तविकता है, आपके पास ईश्वर है, वह अंतिम वास्तविकता है।

यह उस अनंत वास्तविकता में प्रवेश करने वाले पंथ के माध्यम से सीमित है। यह बाइबल की गलत व्याख्या होगी कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में जबरन प्रवेश न करें। आप अनुबंध संरचनाओं के माध्यम से उसकी उपस्थिति में आते हैं।

अर्थात्, इसीलिए हमने पाप स्वीकारोक्ति से शुरुआत की। हम उनकी उपस्थिति में जबरदस्ती नहीं घुसते। हमें उसकी क्षमा मिलती है क्योंकि हमें एहसास होता है कि हमने ईश्वर से पूरे दिल से प्यार न करके और पड़ोसियों से अपने समान प्यार न करके कानून तोड़ा है।

तो, इसलिए, हमें कबूल करने की जरूरत है। पाप के कारण हमें उसकी उपस्थिति में आने का कोई अधिकार नहीं है। ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए उसे अनुबंधों के प्रावधानों के माध्यम से प्रवेश करने की आवश्यकता होती है।

हमने भजन 1 में देखा, इससे पहले कि आप भजन की पुस्तक में जाएँ, यह वह व्यक्ति है जो कानून का पालन करता है, वह व्यक्ति जो कानून का पालन करता है और अपने कानून में आनंद पाता है जो भजन की पूजा में प्रवेश करता है। इसमें कहा गया है, इज़राइली पंथ में, ईश्वर-मनुष्य का संबंध इस अर्थ में स्वाभाविक नहीं है कि यह एक प्रदत्त है। निर्णय की आवश्यकता है।

कानून ही पंथ हैं। धर्मकियाँ और वादे निष्ठा का समर्थन करते हैं। व्यक्तिगत रूप से, ईश्वर और मनुष्य एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े हैं।

धर्म की इस बाहरी अभिव्यक्ति और इसके भीतर भजनों के उपयोग में भाग लेने के लिए हमें यीशु मसीह की मध्यस्थता के माध्यम से भगवान के साथ सही होना चाहिए। खैर, मुझे आशा है कि अब आपको यह समझ में आ गया होगा कि जब मैं पंथ के बारे में बात करता हूँ तो उसका क्या मतलब होता है। मेरा मतलब है, धर्म में यह सामूहिक, बाहरी भागीदारी।

फिर हम सिट्ज़ इम लेबेन लेते हैं, जहां इस पूजा की स्थापना होती है। हम देखते हैं कि स्तोत्रों की उत्पत्ति आवश्यक रूप से मंदिर में नहीं हुई है। इनकी उत्पत्ति डेविड के जंगल के अनुभव से हुई, जहां उसे राजत्व के लिए तैयार किया जा रहा था, जहां वह विश्वास का जीवन सीख रहा था।

और इसलिए, शाऊल और बाद में अबशालोम के विरुद्ध उसकी लड़ाई में, भजन 3 की रचना भी मंदिर से दूर की गई है। भजन 42 और 43, भजनहार हेमोन पर्वत के आसपास कहीं निर्वासन में है। भजन 137 बेबीलोन की निर्वासन में लिखा गया है।

इसलिए, कुछ मामलों में उनकी रचना मंदिर से अलग की गई थी। कुछ की रचना मंदिर के लिए की गई थी। इस मंदिर के लिए कृतज्ञ स्तुति गीत रचे गए।

मन्दिर की स्तुति के स्तोत्र रचे गये। लेकिन जिनकी रचना मंदिर से दूर की गई थी, उनके केंद्र में भी अक्सर मंदिर ही होता था। भजन 3 की तरह, वह अभी भी भगवान के पवित्र स्थान की ओर खेल रहा है।

भजन 42 और 43, वह मंदिर में पूजा के लिए लौटने में सक्षम होने की आशा कर रहा है। किसी भी स्थिति में, भजनों को मंदिर में उपयोग के लिए मुख्य संगीतकार को सौंप दिया गया था। तो, स्तोत्र का मुख्य स्थल मंदिर ही है।

तो, मैंने उसे विकसित कर लिया है। अब पृष्ठ 257 पर मैंने जो आगे विकसित किया है वह ऐतिहासिक आलोचकों द्वारा पंथ की समझ है। ऐतिहासिक आलोचक मूल रूप से वे हैं जो अन्य बातों के अलावा इसकी स्थिति और लेखकत्व के बारे में बाइबल के स्वयं के दावों को अस्वीकार करते हैं।

वे सुपरस्क्रिप्ट और जिसे मैं पोस्टस्क्रिप्ट मानता हूँ, को खारिज कर देते हैं, लेकिन वे उन्हें तुच्छ, अप्रासंगिक मानते हैं। यह स्तोत्र के परिचय पर बहुत बड़ा काम है, बड़े पैमाने पर। इसके बिल्कुल अंत में, गंकल ने सुपरस्क्रिप्ट के बारे में एक छोटा अध्याय, शायद दो या तीन पेज, यह कहते हुए जोड़ा है कि वे सभी बिंदुओं के लिए बेकार हैं।

सुपरस्क्रिप्ट से आपका तात्पर्य भजन से पहले की पहली पंक्ति से है? धन्यवाद। मेरा मतलब है, कविता के ऊपर ही क्या लिखा है। तो, आपके पास डेविड का एक भजन है, या मुझे लगता है, आपके पास मुख्य संगीतकार के लिए एक पोस्टस्क्रिप्ट है।

तो, यह वह गद्य खंड है। दुर्भाग्य से, अंग्रेजी बाइबिल में, यह इटैलिक में है और आपको लगता है कि यह भजन का हिस्सा नहीं है। जब मैंने ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर चर्चा की, तो मैंने तर्क दिया कि वे भजन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

लेकिन गंकल उस चीज़ का उपयोग करते हैं जिसे हम साहित्यिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण कहते हैं जिसमें मूल रूप से आप वेलहाउसियन परिकल्पना को स्वीकार करते हैं। आलोचक को समझने के लिए, आप अधिकांश शिक्षाविदों को समझते हैं, आपको यह समझना होगा कि वे स्तोत्र के पीछे मूसा के बारे में नहीं सोचते हैं। उनका मानना है कि जिस सामग्री का श्रेय मूसा को दिया जाता है वह जालसाजी है।

मेरा मतलब है, वेलहाउज़ेन का कहना है कि यह निर्वासन या निर्वासन के बाद की अवधि में पुजारियों द्वारा किया गया जालसाजी है। तो, उनके लिए, कोई मोज़ेक विनियमन नहीं है। इसलिए, यह बाइबल को सिर के बल खड़ा कर देता है।

तो, आपके पास कोई वास्तविक मूसा नहीं है। मूसा को दी गई सामग्री वास्तव में एक हजार साल बाद की है और डेविड के लिए उपलब्ध नहीं थी। हाँ।

ठीक है। तो, आप पेंटाटेच के बारे में बात कर रहे हैं, न कि मूसा के भजनों के बारे में। खैर, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि हम पंथवादियों को समझते हैं जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, हम पुजारी सामग्री और तम्बू के नियमों के बारे में सोचते हुए वापस जाते हैं।

लेकिन मैं उस तक पहुंचूंगा। खैर, गंकल के लिए, वह मानता है कि भजन, उनके रूप और सभी पहले मंदिर में वापस जाते हैं। वह मंदिर और पंथवादियों को पहचानता है।

लेकिन उनके लिए, स्तोत्र स्वयं, उनकी वेलहौसियन पृष्ठभूमि के कारण निर्वासन के बाद की अवधि में उत्पन्न हुआ है। तो यह निर्वासन के बाद के भौतिक काल के कवियों की नकल करना

या मंदिर सामग्री की नकल करना है। लेकिन वे वास्तव में आराधनालय के लिए प्रार्थनाएँ लिख रहे हैं, मंदिर के लिए नहीं।

वे मंदिर के प्रपत्रों का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन वे वास्तव में विश्वास नहीं करते हैं, वह वास्तव में विश्वास नहीं करते हैं कि वे मंदिर के समय लिखे गए थे। वे बहुत बाद में लिखे गए क्योंकि उन्होंने केवल सुपरस्क्रिप्ट को हटा दिया और यह धर्म के वेलहौसियन विकास के अनुरूप होगा। तो गुंकल यहीं से आ रहा है।

तो, वे कहते हैं, वे पंथवादियों में निहित हैं, लेकिन अधिकांश स्तोत्र लोकतंत्रीकरण को दर्शाते हैं। यानी अब कोई पुजारी नहीं है। अब कोई राजा नहीं है।

तो अब यह केवल पंथ के आम लोग हैं और निर्वासन और निर्वासन के बाद के युगों के हैं, जिसमें कल्पना का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि राजा और निर्वासन-पूर्व काल की उनकी लड़ाइयाँ। तो, आप देख सकते हैं कि यह सिर्फ स्तोत्र की सैन्य भाषा है जो निर्वासन के बाद की अवधि में उस व्यक्ति की समस्याओं की कल्पना है जो आमतौर पर बीमारी से पीड़ित है। मैंने एक टिप्पणी की कि उनके मन में, ये पीड़ित कुछ हद तक मनोवैज्ञानिक हैं और वे पूरी दुनिया को अपने खिलाफ देखते हैं।

यह वास्तव में थोड़ा सा है, अगर मैं बहुत मजबूत नहीं हूँ, मेरे दिमाग में शैतानी है, तो यहां क्या हो रहा है। तो, गुंकल के लिए भजन का अंश आराधनालय से है जिसमें निजी व्यक्तियों के लेखन शामिल हैं और उनका पंथवादियों से कोई संबंध नहीं है। यह गुंकल का दृष्टिकोण है।

आप अकादमिक क्षेत्र में नहीं हो सकते, और यह बाइबिल प्रशिक्षण में एक अकादमिक टैक है। आप शिक्षा जगत में नहीं रह सकते और गुंकल और उनकी सोच से रूबरू नहीं हो सकते। वह हमारे क्षेत्र के मौलिक विचारक हैं।

मुझे लगता है कि आपको समझना चाहिए कि वह क्या कह रहा है और वह कहां से आ रहा है। अब, मोविनकेल गुंकल का छात्र था और मोविनकेल ने पहचान लिया कि वे मंदिर से आए हैं। इसलिए मोविनकेल ने भजनों की व्याख्या डेविड द्वारा नहीं, बल्कि मंदिर पूजा काल से, पूर्व-निर्वासन काल से की है।

वह उस चीज़ का पुनर्निर्माण करता है जिसे सिंहासनारोहण उत्सव कहा जाता है। अब, जैसा कि मैं कह रहा हूँ, आपको यह समझना होगा कि उसकी पृष्ठभूमि में मूसा बिल्कुल भी नहीं है। तो उसकी समझ का स्रोत कहाँ है? खैर, वह बुतपरस्त साहित्य, बुतपरस्त संस्कृतियों को देखता है।

उदाहरण के लिए, बेबीलोन में, मर्दुक, अराजकता पर विजय पाने वाले देवता, मर्दुक को हर साल सिंहासन पर बैठाया जाता था क्योंकि बुतपरस्त धर्मों में, उन्हें शुरुआत और अंत के साथ इतिहास की कोई समझ नहीं थी और इतिहास का कोई मतलब नहीं था। उनकी चिंता चक्रीय थी - हर वर्ष पुनः सृजन करना, वसंत को वापस लाना, सर्दी की मृत्यु से जीवन को वापस लाना। मर्दुक वह देवता था जिसने रसातल और अराजकता पर विजय प्राप्त की थी।

इसलिए, उन्होंने हर साल रचना को दोबारा दोहराया। और मोविनकेल के लिए, इसलिए, उनका मानना है कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को प्रतिवर्ष सिंहासन पर बैठाया जाता था। वह वास्तव में खुद को अपने शिक्षक गुंकल पर बनाता है।

गुंकल का मानना था कि अडोनाई मैलाच की अभिव्यक्ति का मतलब याहवे या भगवान राजा बन गया है। वह समझ गया कि उसे हर साल एक सिंहासन समारोह में राजा के रूप में ताज पहनाया जाता है। मुझे लगता है कि यह अभिव्यक्ति पाँच भजनों में होती है, भजन 47, अंग्रेजी में श्लोक आठ, हिब्रू में श्लोक नौ, भजन 93.1 में, भजन 96.10 में।

और फिर 97.1 और 98.1 में। आप देख सकते हैं कि पाठ में इसे देखने में कुछ समय लग सकता है। मैं भजन 93 से 99 तक के अंतिम भजनों को लूँगा, जिन्हें सिंहासनारोहण भजन कहा जाता है। लेकिन आप देखते हैं कि भजन 93 कैसे शुरू होता है, प्रभु शासन करता है।

गुंकल और मोविनकेल इसका अनुवाद करेंगे, प्रभु राजा बन गए हैं। और वे प्रति वर्ष कहा करते थे, यहोवा राजा बन गया है। आप इसे भजन 96 और श्लोक 10 में फिर से देखेंगे, राष्ट्रों के बीच कहें, प्रभु शासन करता है, या प्रभु राजा बन गया है।

पुनः, 97.1, प्रभु शासन करता है। और भजन 99.1, प्रभु राज करता है। और ये अन्य गीत मूलतः परमेश्वर के शासन का जश्न मना रहे हैं।

इसलिए भजन 93 से 99 तक को सिंहासनारोहण भजन कहा जाता है। और उनका मतलब यह है कि यहोवा को हर साल एक मंदिर अनुष्ठान में सिंहासन पर बैठाया जाता था। और इन्हें सिंहासनारोहण स्तोत्र कहा जाता है।

मैं लिखता हूँ कि यहां दृश्य यह है कि एक शरद उत्सव में, उन्हें लगा कि यह पतन नवीनीकरण में था, बाद के शासनकाल में, उद्घोषणा के संबंध में, यहोवा राजा बन गया है। और वे उस उत्सव से प्रभावित हैं जिसे अकितु उत्सव के नाम से जाना जाता है जहां मर्दुक को हर साल सिंहासन पर बिठाया जाता था। अब हम यह भी पाते हैं कि निःसंदेह गुंकल और मोविनकेल के पास युगैरिटिक ग्रंथ नहीं थे।

वे 1900, 1925 के आसपास लिख रहे हैं। और युगैरिटिक ग्रंथों की खोज 1940 तक नहीं हुई थी। लेकिन हम युगैरिटिक मिथकों में ऐसी ही समान धारणाएं पाते हैं, जहां अब यह मर्दुक नहीं है, बल्कि बाल, शासन का देवता है।

और जबकि मर्दुक युगैरिटिक मिथकों में अराजकता की देवी, तियामत को हरा रहा था, यह बाल है, जो जीवन देने वाले शासन का देवता है बनाम या तो मोट, जिसका हिब्रू में अर्थ है मृत्यु, या यम, जिसका अर्थ है समुद्र या नाहर नदी। लेकिन इसे साहित्य में कैओस काम्फ के रूप में जाना जाता है, जो मृत्यु, बाँझपन, अराजकता के देवताओं के विरुद्ध सृजन करने वाले ईश्वर के बीच की लड़ाई है। और पृष्ठ 237 पर गुंकल के अनुसार, पंथवादी दुनिया और इज़राइल के निर्माण को फिर से लागू करने और फिर से साकार करने का कार्य करता है।

दूसरे शब्दों में, वे मानते हैं कि ईश्वर शासन करता है, लेकिन यह एक आवश्यक हिस्सा था, लगभग संस्कारों की तरह। यह जनसमूह के बारे में लगभग रोमन कैथोलिक दृष्टिकोण जैसा है, जहां आप सामूहिक रूप से ईसा मसीह का बलिदान देते हैं। और इसलिए, वे अनुष्ठान के माध्यम से ईसा मसीह के पुनः बलिदान के सामूहिक दृश्य के समान हैं, वे सृष्टि और इज़राइल के इतिहास या इज़राइल की मुक्ति दोनों को फिर से बना रहे हैं।

अब, जैसा कि मैं कहता हूं, गंकल ने खुद को केवल इन पांच स्तोत्रों तक सीमित कर लिया। मोविन्केल के लिए, लगभग संपूर्ण स्तोत्र इस अनुष्ठान से संबंधित है। यह स्तोत्रों की पुस्तक की संपूर्ण पुनर्व्याख्या है।

वह शिक्षा जगत में बहुत प्रभावशाली हैं। और फिर, आप शिक्षा जगत, विश्वविद्यालय के साहित्य में मोविन्केल का नाम लिए बिना दूर तक नहीं पढ़ सकते। पृष्ठ 258 पर, स्तोत्र के सिंहासनारोहण को और अधिक समझाने की कोशिश करते हुए, वह व्याख्या करता है, इसलिए, यहोवा शासन करता है, यहोवा राजा बन गया है।

और मैंने कहा, यह सृष्टि की अराजकता के मिथकों की पृष्ठभूमि के रूप में उत्पन्न हुआ है। और इस प्रकार इज़राइल पर लागू होता है, यह मिस्र से निर्वासन और लाल या रीड सागर पर विजय के निर्माण और उत्सव का पुनः अधिनियमन और हाँ है। और इसलिए, यह सृजन और मुक्ति दोनों को पंथ के भीतर पुनः क्रियान्वित किया जा रहा है।

और सिंहासनारोहण उत्सव में यहोवा का आगमन दुनिया को फिर से व्यवस्थित कर देता है और दुश्मन द्वारा शहर और लोगों पर किए जाने वाले हर हमले को कुचल देता है। और जैसा कि वे देखते हैं, आम तौर पर राजा द्वारा यहोवा का प्रतिनिधित्व किया जाता है, और राजा को भगवान के रूप में माना जाता है जो विजय के साथ शहर में प्रवेश करता है। तो, वह इसे देखता है, जैसा कि मैं कहता हूं, नंबर छह में, यह पवित्र है कि इस अनुष्ठान के माध्यम से, आप प्रकृति और इतिहास के इस पुनः निर्माण में भाग ले रहे हैं।

इसका उद्देश्य भजनों के बीच अंतर्संबंधों की खोज करना है जो दर्शाता है कि मण्डली पंथ के कृत्यों और शब्दों के माध्यम से क्या अनुभव और महसूस कर रही थी। अब मैं मोविन्केल से उद्धृत करता हूं, अधिनियम में निहित शक्ति शब्द में भी केंद्रित है। पवित्र वचन प्रभावी और रचनात्मक है।

या फिर, यह एक नया उद्घरण है, पंथ के स्मरण और पुनः अधिनियमन में, मुक्ति के ऐतिहासिक तथ्य प्रभावी वास्तविकता में बदल जाते हैं। और फिर, हम न तो भजनों को समझ पाएंगे और न ही वास्तविक जीवन में इसके स्थान, इसकी सांस्कृतिक स्थिति और इसके उद्देश्य को तब तक समझ पाएंगे जब तक कि हम इसे संबंधित त्योहार और इसके विचारों और सांस्कृतिक रूपों के साथ नहीं जोड़ देते। तो, आप देख सकते हैं कि यह भजनों के बारे में आपके सोचने के पूरे तरीके को बदल देता है।

इसके बारे में मेरा मूल्यांकन क्या है? खैर, कुछ सकारात्मक मूल्यांकनों के लिए, मुझे लगता है कि शायद राजशाही के तहत शरद उत्सव चर्च के कैलेंडर की तरह ही प्राथमिक त्योहार बन गया। यह फसह और पित्तुकुस्त का दिन था। इसलिए, मुझे लगता है कि राजत्व के तहत, पतझड़ का त्योहार इज़राइल के फसह और पेंटेकोस्ट के कैलेंडर में प्रमुख त्योहार बन गया।

और फिर पतझड़ का त्योहार, जिसमें सुक्कोट, नया साल, प्रायश्चित का दिन, इत्यादि शामिल थे। वह कहते हैं, उदाहरण के लिए, किंग्स हमें बताते हैं कि मंदिर का समर्पण इसी समय और इस तरह से हुआ था। इस्राएल के सब पुरुष इस्राएल के पास आए, और यहोवा के सातवें महीने के पर्व के समय इस्राएल के सब पुरुष राजा सुलैमान के पास इकट्ठे हुए।

और आपके छंद हैं। और हमें बताया गया है कि जब यारोबाम ने एक प्रतिद्वंद्वी पंथ की स्थापना की, तो यारोबाम ने यहूदा में मनाए जाने वाले त्योहार की तरह, आठवें महीने के 15वें दिन एक उत्सव की स्थापना की। तो जाहिर तौर पर वह उत्तर का प्रमुख त्योहार था।

और निस्संदेह, यारोबाम का पंथ पूरी तरह से मोज़ेक पंथ का घटियाकरण है। तो, पवित्र, ठीक है, बहुत हो गया डेविड, पवित्र स्थल अब यरूशलेम नहीं है। यह डैन और बतशेबा हैं।

परमेश्वर का प्रतीकवाद अब सन्दूक और वाचा नहीं है, बल्कि यह एक बैल इत्यादि है। खैर, होशे हमारे राजा के उत्सव के दिन के बारे में बात करता है, हाकिम शराब से जलते हैं। और फिर, शायद हमारे राजा का दिन यह पतझड़ का त्योहार है, जिसने शायद डेविड के घराने और भगवान के शहर के रूप में सियोन के चुनाव का भी जश्न मनाया।

यह समझाएगा कि हमें योशियाह के सुधार के तहत राजाओं के बारे में क्यों बताया गया है, न कि न्यायाधीशों के दिनों से, न ही इसराइल के राजाओं और यहूदा के राजाओं के दिनों के दौरान ऐसा कोई फसह मनाया गया था। ऐसा लगता है मानो पतझड़ के त्योहार के पक्ष में फसह को ग्रहण लगा दिया गया हो। इसलिए, मुझे लगता है कि इसमें कुछ हद तक सच्चाई है कि राजशाही के समय में पतझड़ का त्योहार इज़राइल में प्रमुख त्योहार था।

कुछ लोगों के विरुद्ध, मैं यह तर्क दूंगा कि एडोनाई मैलाच का अनुवाद करना व्याकरणिक रूप से संभव है कि यहोवा राजा बन गया है। मेरे विचार से, इनमें से कोई भी एक व्यवहार्य विकल्प है। और तीसरा महत्व यह है कि कुछ भजन उस अराजकता के आलोक में लिखे गए हैं।

वे उस कल्पना का उपयोग कर रहे हैं, उस धर्मशास्त्र का नहीं, बल्कि वे उस कल्पना का उपयोग भगवान की रचनात्मक गतिविधि के लिए कर रहे हैं। मिथकों में तीन आवश्यक तत्व होते हैं। वहाँ नायक है जो सृजनकर्ता ईश्वर है।

वहाँ प्रतिपक्षी है, वह ईश्वर है जो सृष्टि को नियंत्रित कर रहा है। और फिर जब सृष्टिकर्ता परमेश्वर शत्रुतापूर्ण, निरोधक परमेश्वर पर विजय प्राप्त कर लेता है, तब वह एक मंदिर के योग्य होता है और वे उसके सम्मान में एक मंदिर का निर्माण करते हैं। ये तीन प्रमुख विचार हैं, या वे उसके मंदिर का जश्न मनाते हैं क्योंकि वह विजयी भगवान है।

अब भजन 93 को देखें और देखें कि ये तीन तत्व कैसे काम में आते हैं। और मुझे लगता है कि जब तक आप इन तीन तत्वों को नहीं समझ लेते, यह लगभग एक अबोधगम्य भजन है। हम पढ़ते हैं, प्रभु राज करता है।

वह ऐश्वर्य का वस्त्र धारण किये हुए है। प्रभु महिमा का वस्त्र पहने हुए हैं और शक्ति से सुसज्जित हैं। वास्तव में, दुनिया स्थापित, दृढ़ और सुरक्षित है।

तुम्हारी गद्दी बहुत पहले स्थापन हुई थी। आप या आपका सिंहासन अनंत काल से हैं। हे प्रभु, समुद्र ऊपर उठ गया है।

समुद्र ने अपनी आवाज बुलंद कर दी है। समुद्र ने अपनी प्रचंड लहरें उठायी हैं, जो विशाल जल के गर्जन से भी अधिक शक्तिशाली, और समुद्र को तोड़नेवालों से भी अधिक शक्तिशाली हैं। ऊँचे पर यहोवा शक्तिशाली है।

हे प्रभु, तेरी प्रतिमाएं दृढ़ रहें। पवित्रता आपके घर को अनंत दिनों तक सुशोभित करती है। आप देखिए, वहां आपके पास ये तीन तत्व हैं।

एक तरह से वे इसे मेरे सामने इस पृष्ठभूमि में रखेंगे, एक तरह से इसे नष्ट कर देंगे। फिर भी, यदि हम दूसरी बार भोलापन ला सकें, और दोबारा उस पर वापस आ सकें, तो हम इसे बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। परन्तु आप ध्यान दें कि प्रभु शक्ति से ओत-प्रोत हैं और संसार की रचना के संबंध में हैं।

तो, वह कहता है, प्रभु शासन करता है। वह ऐश्वर्य का वस्त्र धारण किये हुए है। उसके वस्त्र पहनने का एक दोहरा रूपक एक दोहरी आकृति है, जिसका अर्थ है उसके वस्त्र पहनने का एक रूपक।

महिमा उस महिमा का एक रूप है जो उसने अराजकता पर सृजन की जीत से अर्जित की थी। वह ऐश्वर्य का वस्त्र धारण किये हुए है। प्रभु महिमा का वस्त्र पहने हुए हैं और शक्ति से सुसज्जित हैं।

सचमुच, संसार स्थापित, दृढ़ और सुरक्षित है। लेकिन आप देखते हैं कि वह शासन करता है, लेकिन इसे वार्षिक रूप में नहीं सोचा जाता है। यह पूरा हो गया है।

ध्यान दें कि वह इसे कैसे कहते हैं, मुझे लगता है कि इससे यह अर्थ मिलता है कि प्रभु शासन करते हैं, न कि वह राजा बनते हैं। तुम्हारी गद्दी बहुत पहले स्थापन हुई थी। आप या आपका सिंहासन अनंत काल से हैं।

यहां वार्षिक पुनर्मूल्यांकन के बारे में कुछ भी नहीं है। वह आरंभ से ही वहां है और आरंभ से ही जब उसने अंधकार के ऊपर प्रकाश का सृजन किया, उदाहरण के लिए समुद्र के ऊपर भूमि का निर्माण किया। लेकिन अब ध्यान दें कि प्रतिद्वंद्वी का प्रतिनिधित्व समुद्र द्वारा किया जाता है।

पुराने नियम में समुद्र मृत्यु का प्रतीक है। वे समुद्री परिदृश्य के रोमांटिक दौर से नहीं गुज़रे थे। समुद्र फिर से इस्राएल के प्रति शत्रुतापूर्ण हो गया।

आप इसमें कुछ भी नहीं उगा सकते। आप इसमें डूब सकते हैं। उन्हें इसमें कुछ भी अच्छा नहीं दिखा।

समुद्र ने यहोवा को ऊपर उठा लिया है। समुद्र ने अपनी आवाज बुलंद कर दी है। समुद्र ने अपनी तेज़ लहरें उठा ली हैं।

वे उन सभी बुराईयों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, लेकिन पानी की गड़गड़ाहट से भी अधिक शक्तिशाली, समुद्र को तोड़ने वालों से भी अधिक शक्तिशाली, ऊंचे पर प्रभु शक्तिशाली है। और उसके पास एक ऐसा घर है जो सदैव बना रहेगा। परन्तु वह घर पवित्रता और उसकी वाचा की विधियों द्वारा प्रतिष्ठित है।

हे प्रभु, तेरी विधियां स्थिर रहें। पवित्रता आपके घर को अनंत दिनों तक सुशोभित करती है। इसलिए मैं कह रहा हूं कि यह पौराणिक कल्पना हमें हमारी व्याख्या में मदद करती है।

वास्तव में, जॉन लेविंसन कहते हैं, और मैं शायद अपनी सिनाई और सियोन, बहुत अच्छी किताब में बहुत चरम पर हूं, कि जब तक आप इसे नहीं समझते, आप कुछ भजनों को नहीं समझते हैं। शायद, मुझे लगता है कि इससे हमें भजन 93 और वहां क्या चल रहा है, इसे समझने में मदद मिलेगी। लेकिन नकारात्मक रूप से, समस्या यह है कि यह त्योहार के पुनर्निर्माण के लिए प्राचीन निकट पूर्वी बुतपरस्त धर्मों को देखता है, न कि मोज़ेक कानून को।

उनके लिए, यह अस्तित्व में नहीं था। यह ऐतिहासिक आलोचना की अंतर्निहित विषमता में भाग लेता है। दो, त्योहार के सभी पुनर्निर्माण काल्पनिक हैं, जिनमें स्पष्ट शास्त्रीय वारंट का अभाव है।

विचारों की विविधता पद्धति पर सवाल उठाती है। गुंकेल ने स्वयं मोविन्केल के इतने बड़े पैमाने पर पुनर्निर्माण को अस्वीकार कर दिया। उनका कहना है कि यह कोरी कल्पना है।

कोई रोकटोक नहीं है। इसलिए, उन्होंने स्वयं को केवल पाँच तक ही सीमित रखा है, लेकिन उन्होंने इसकी शुरुआत इन पाँचों के लिए उत्सव के भीतर की। आज, बड़े पैमाने पर इसे अस्वीकार कर दिया गया है।

यह स्वीकार किया गया है कि ये सिंहासनारोहण स्तोत्र हैं, लेकिन काफी हद तक संपूर्ण पुनर्निर्माण को खारिज कर दिया गया है। यही कारण है कि मैं मोविन्केल के सिंहासनारोहण भजनों में शामिल होने से भी झिझक रहा था। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि भजन में शिक्षित व्यक्ति को इस सामग्री के बारे में पता होना चाहिए।

वीज़र, जैसा कि मैं कहता हूं, अन्य व्याख्याएं भी हैं। वीज़र ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी सीरीज़ में अपनी उत्कृष्ट पुस्तक में एक पतझड़ उत्सव देखता है। मुझे लगता है कि उनकी सर्वश्रेष्ठ टिप्पणियों में से एक है।

लेकिन वह सोचता है कि ये सभी भजन पतझड़ के त्योहार में फिट बैठते हैं, लेकिन वह सोचता है कि वे सभी वाचा का जश्र मनाते हैं, सिनाई वाचा का निर्माण। फिर, यह एक सार्वभौमिकता है जो बहुत व्यापक है। इसलिए, मैं एक ही त्योहार के विरुद्ध सभी भजनों की व्याख्या करने से नहीं चूकता।

मेरे पास, मैं जाता हूँ, स्तोत्र का स्पष्ट अर्थ क्या है? मेरे लिए, स्तोत्र का स्पष्ट अर्थ यह है कि हमें सुपरस्क्रिप्ट को स्वीकार करना चाहिए। इसका मतलब डेविड का एक भजन होगा, उदाहरण के लिए, 14, जब वह अबशालोम से भाग गया था। उस स्थिति में, कई भजन निजी प्रार्थनाओं के रूप में शुरू हुए।

यह गंकल का उलटा है। मंदिर से होने और फिर निजी प्रार्थनाओं के बजाय, वे निजी प्रार्थनाओं के रूप में शुरू हुईं और फिर वे मंदिर पूजा का हिस्सा बन गईं। जैसा कि मैंने कहा, कुछ भजन स्पष्ट रूप से भगवान के घर से दूर लिखे गए हैं, लेकिन अन्य भजन मंदिर के लिए बनाए गए हैं।

आपके मन में जो प्रश्न हैं उनमें से एक, कुछ भजन हैं जो ज्ञान भजन हैं। हम बाद में उन पर गौर करेंगे। और उदाहरण के लिए, भजन 1 वास्तव में मंदिर की पूजा में कैसे फिट बैठता है, या यह फिट बैठता है? शायद यह सिर्फ आराधनालय और ध्यान के लिए है।

लेकिन भजनों ने ज्ञान कैसे दिया, उदाहरण के लिए, भजन 49 के लिए जीवन में क्या सेटिंग थी, जिसे हम देखेंगे, जो धर्मशास्त्र और बुराई की समस्या से संबंधित है? वास्तव में वह मंदिर के जीवन में कैसे फिट हुआ? उस पर अधिक बहस होती है। मुझे लगता है कि यह इसमें फिट बैठता है, लेकिन हम उस पर वापस आएंगे।

मैं अब समारोह में कूदने जा रहा हूँ। पंथ कैसे कार्य करता है? मैं इसे और अधिक सामान्य रूप से देखने जा रहा हूँ, और फिर मैं इसे भजनों पर लागू करूँगा। हम देखेंगे कि वे मंदिर की पूजा-पद्धति और पूजा के विरुद्ध बने हैं।

मेरा सुझाव है कि स्तोत्र के चार उपयोग हैं, चार या पाँच। वे पृष्ठ 259 पर प्रतीकात्मक हैं। वे विशिष्ट हैं।

वे सामान्य रूप से कार्य करते हैं। वे संस्कारपूर्वक कार्य करते हैं। और चौथा, वे कलात्मक प्रचार के रूप में कार्य करते हैं जो एक दृष्टिकोण की वकालत करता है, नाजी प्रचार की तरह नहीं, जो झूठ पर आधारित था, बल्कि सच्चाई पर आधारित था।

सबसे पहले, प्रतीकात्मक। यह एक दृश्यमान रूप है जो धर्म की जीवंत सामग्री को गहराई से चित्रित करता है। दूसरे शब्दों में, आपके पास धार्मिक अनुभव है और अब आप इसे आंतरिक आध्यात्मिक वास्तविकता से लेकर बाहरी कार्यों और भगवान के प्रति अर्पित किए जाने वाले भगवान के प्रति मनुष्य के बाहरी कार्यों में ठोस अभिव्यक्ति देते हैं।

उदाहरण के लिए, ऊपर उठता हुआ धुआं ईश्वर तक जाने वाली प्रार्थनाओं का प्रतिनिधित्व करेगा। हाथों को ऊपर उठाना ईश्वर को उपहार अर्पित करने और मनुष्य के लिए उनकी कृपा या ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का प्रतीक होगा। अब यह सच है कि कोई भी व्यक्ति पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता था और केवल महायाजक ही वर्ष में एक बार वहां प्रवेश कर सकता था।

लेकिन इसमें कोई रहस्य नहीं था। यह समस्त इस्राएल के लिये स्पष्ट रूप से प्रगट किया गया। इसलिए, वे कल्पना से जीते थे।

वे कल्पना कर सकते थे कि महायाजक पवित्र स्थान के भीतर क्या कर रहा था। और परमपवित्र स्थान में, यह सब बहुत प्रतीकात्मक था। दीवारों पर ताड़ के पेड़ और सभी प्रकार के पेड़ उकेरे गए थे।

यह ईडन गार्डन और अनन्त जीवन का प्रतिनिधित्व करता था। पवित्र स्थान के बिल्कुल केंद्र में वाचा का सन्दूक था। वास्तव में, यदि आप सुलैमान के मंदिर में गए, तो सभी दरवाजे अधिक संकीर्ण होते जा रहे हैं, मुख्य द्वार, प्रवेश द्वार, और फिर परमपवित्र स्थान में, यह सब ध्यान केंद्रित कर रहा है।

छत गिर रही है। इसलिए, पूरा ध्यान वाचा के सन्दूक पर है। ऐसा कुछ नहीं है।

यह सोने से ढका हुआ है, लेकिन बुतपरस्त धर्मों में ऐसा कुछ नहीं है। बुतपरस्त धर्मों में, यह एक प्रकृति देवता था। वह सूर्य या चंद्रमा की मूर्ति रही होगी और उससे छेड़छाड़ की जा सकती थी।

लेकिन यहाँ इस सब के केंद्र में ईश्वर का उत्कृष्ट नैतिक शासन था। यह नैतिकता थी। यह जीने का एक तरीका था।

ऐसा कुछ नहीं है। इज़राइल के धर्म के केंद्र में ईश्वर की उत्कृष्ट नैतिक इच्छा है। यह नैतिकता है।

तब 10 आज्ञाएँ वाचा के सन्दूक में थीं। इसके ऊपर खून से भरा दया का आसन था जिसने प्रायश्चित्त किया, जिससे पापी पूजा करना संभव हो गया, पापी लोगों के लिए भगवान की उपस्थिति में प्रवेश करना संभव हो गया। ढक्कन के ऊपर करूब थे।

वे स्फिंक्स जैसी आकृतियाँ थीं जो पवित्रता की रक्षा करती थीं और उसे संरक्षित रखती थीं। ताकि जैसे करूबों ने अदन की वाटिका की रक्षा की, वैसे ही पाप उसमें प्रवेश न कर सके। इसलिए, करूबों ने परमेश्वर के पवित्र स्थान की पवित्रता की रक्षा की।

वह सब संचार कर रहा है। फिर उसके बाहर, आपके पास वह रोशनी थी जो अंधेरे को भेद रही थी। वहाँ प्रदर्शन की रोटी थी जिससे तुम परमेश्वर के साथ संगति में खा सकते थे।

फिर उसके बाहर, प्रार्थना की प्रतीक धूप की वेदी थी। तो यह सब प्रतीकवाद धर्मशास्त्र के माध्यम से प्रतीकात्मक शिक्षण था। मैं सोचता हूँ कि भजन 73 लीजिए।

मैं पूरा भजन पढ़ूंगा, लेकिन आइए इसे लें और पढ़ें। ध्यान दें क्या होता है। देखो, यह अभयारण्य में है।

मैं समझता हूँ कि वह इस प्रतीकवाद को देखता है कि उसके विश्वास का संकट हल हो गया है। यह अब भजन 73 है, जिसे आमतौर पर ज्ञान भजन कहा जाता है। लेकिन वह फिर से शुरुआत करता है, उसके पास गहन प्रश्न हैं, लेकिन वह इन सभी को प्रशंसा में छिपा देता है।

वह वास्तव में भगवान की अच्छाई पर संदेह नहीं करता है। वह इस पर सवाल उठाता है, लेकिन वह तुरंत अपने विश्वास की पुष्टि करता है। निःसंदेह परमेश्वर इस्राएल के लिये, अर्थात् उन लोगों के लिये भला है जो हृदय के शुद्ध हैं।

वह आश्चर्य है। यही हकीकत है। चाहे उसकी कोई भी शिकायत हो, चाहे उसके कोई भी प्रश्न हों, उसका मूल विश्वास यह है कि ईश्वर अच्छा है।

और वह अपनी वाचा को कायम रखता है। लेकिन फिर भी, यहाँ मेरी समस्या है क्योंकि उसका अनुभव उसके विश्वास से टकराता है। तो, वह जो करता है वह वास्तव में शुरू होता है, वह कहता है, लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मेरा दिल, मेरा पैर लगभग फिसल चुका था।

मैं अपना पैर लगभग खो चुका था। क्योंकि जब मैं दुष्टों की भलाई पर विचार करता था, तब मैं अभिमानियों से डाह करता था। उनका कोई संघर्ष नहीं है।

इनका शरीर स्वस्थ और ताकतवर होता है। वे सामान्य मानवीय बोझ से मुक्त हैं। वे मानवीय बुराइयों से ग्रस्त नहीं हैं।

उनकी शान उनका हार है। वे स्वयं को हिंसा का वस्त्र धारण करते हैं। उनके कठोर हृदयों से अधर्म निकलता है।

उनकी बुरी कल्पनाओं की कोई सीमा नहीं है। वे उपहास करते हैं और द्वेष से, अहंकार से बोलते हैं। वे उत्पीड़न की धमकी देते हैं।

उनके मुँह स्वर्ग का दावा करते हैं। उनकी जीभें पृथ्वी पर अधिकार कर लेती हैं। इसलिए, उनके लोग उनकी ओर रुख करते हैं और प्रचुर मात्रा में पानी पीते हैं।

वे कहते हैं, भगवान को कैसे पता चलेगा? क्या परमप्रधान के पास ज्ञान है, वह कुछ जानता है? दुष्ट ऐसे ही दिखते हैं, हमेशा परवाह करते हैं, परवाह से मुक्त। और वे धन इकट्ठा करते चले जाते हैं। निश्चय ही व्यर्थ ही मैं ने अपना हृदय शुद्ध रखा है।

मैंने बेगुनाही से हाथ धो लिया है। दिन भर मैं कष्ट सहता रहा हूँ और हर सुबह नई सजा लेकर आती है। यदि मैं इस प्रकार बोलता, तो मैं तुम्हारे बच्चों को धोखा देता।

जब मैंने यह सब समझने की कोशिश की, तो इसने मुझे तब तक बहुत परेशान किया जब तक मैं भगवान के पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर गया। तब मुझे उनकी अंतिम नियति समझ में आई। निश्चय ही तुम उन्हें फिसलन भरी भूमि पर रखते हो।

तू ने उन्हें उजाड़ने के लिये नीचे गिरा दिया। वे कैसे अचानक नष्ट हो जाते हैं, भय से पूरी तरह बह जाते हैं। जब कोई जागता है तो वे एक सपने की तरह होते हैं।

जब आप उठेंगे, भगवान, आप उन्हें कल्पनाओं के रूप में तुच्छ समझेंगे। जब मेरा हृदय दुःखी और मेरी आत्मा दुःखी थी, तब मैं नासमझ और अज्ञानी था। मैं तुम्हारे सामने एक क्रूर जानवर था।

फिर भी मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लो। आप अपने परामर्श से मेरा मार्गदर्शन करें।

और उसके बाद, तुम मुझे महिमा में ले जाओगे। स्वर्ग में मेरा कौन है, परन्तु तू और पृथ्वी पर तेरे सिवा और कोई वस्तु नहीं जो मैं चाहता हूँ। मेरा शरीर और मेरा हृदय विफल हो सकता है, परन्तु परमेश्वर मेरे हृदय और मेरे हिस्से की शक्ति सदैव रहेगा।

जो तुमसे दूर हैं वे नष्ट हो जायेंगे। आप उन सभी को नष्ट कर देते हैं जो आपके प्रति वफादार नहीं हैं। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, ईश्वर के निकट रहना अच्छा है।

मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान बनाया है। मैं तेरे सब कामों का वर्णन करूँगा।

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र संख्या 19, धार्मिक दृष्टिकोण, कल्टस स्लैश अनुष्ठान है।